Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय इतिहास में भक्तिकालीन संत पीपाजी का जीवन एवं कृतित्व एक अध्ययन

डॉ. ओमप्रकाश गेहलोत*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय महाविद्यालय, शामगढ़, जिला मंदसौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – राव पीपा, जो बप्पा के नाम से भी उच्चारित किये जाते थे। ये बड़े ही प्रसिद्ध शासक रहे है और उनकी प्रसिद्धी का कारण उनका शासक होना नही है, इसका कारण उनके द्वारा राज्य का त्याग कर संत प्रवृत्ति को अपनाना रहा था। राव पीपा सन् 1360 ई. में गद्दी पर बैठे। इनका आरंभिक नाम प्रतापराव खींची था। संत बनने के पश्चात् संत पीपा के नाम से प्रसिद्ध हुए, ये कढ़वाराव के पुत्र थे। कड़वाराव के अन्य पुत्रों में भजनसिंह, चाचदेव व मलयसिंह का नाम आता है। इनमें से मलयसिंह ने मालवा में राघोगढ़ का राज्य स्थापित किया, मलयसिंह ने राघोगढ़ से शेरगढ़ लेकर अपने राज्य राघोगढ़ की स्थापना की एवं राघोगढ़ का स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आया। पीपाजी ने अनेक वर्षो तक गागरोनगढ़ के राज्य पर शासन किया। उस समय के गुजरात, राजपूताना और मध्यभारत के राज्यों की राजकुमारियों से इन्होने विवाह संबंध स्थापित किये। पीपाराव के समय में दिल्ली के सुल्तान ने उनके राज्य पर आक्रमण किया। आक्रमण का कारण गागरोनगढ़ के द्वारा दिल्ली सल्तनत को कर नही देना था। जिसके कारण आक्रमण हुआ। अत: सुल्तान ने अपने सेनापति जिसका नाम जर्दफिरोज था, के सेनापतित्व में लगभग 12000 सैनिको के साथ भयानक आक्रमण किया, परंतु राव पीपा ने अपने अदम्य साहस एवं अप्रतिम शौर्य का परिचय दिया। इस आक्रमण में दिल्ली सल्तनत को मुंह की खानी पड़ी व गागरोनगढ़ पर अधिकार करने का सुनहरा अवसर खो दिया। इस युद्ध में राव पीपा के रण कौशल का प्रदर्शन सबने देखा, हांलाकि इस युद्ध में स्वयं सुल्तान भी सम्मिलित था फिर भी वह इस युद्ध के परिणाम को अपने पक्ष में करने में विफल रहा व उसको दिल्ली खाली हाथ ही लौटना पड़ा।[1]

प्रतापराव ने अपनी प्रजा में भेदभाव नही किया। वे सभी धर्म के लोगो के साथ में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते थे। प्रतापराव के समय में भक्तिकाल का आगमन हो चुका था। उस समय में संत रामानंद और उनके शिष्य जिनमें कबीर, नानक, दादू, सेना, रविदास जनमानस में ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनो रूपों का गुणगान किया करते थे। उस समय की भक्ति भावना से प्रतापराव भी अपने आप को नही बचा सके। प्रतापराव का मन भी प्रारंभ से ही युग की भावना के अनुरूप था। इन्होने इसी भावना से प्रभावित होकर के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी रामानंद से दीक्षा ली और उनके शिष्य बन गए। रामानंद के प्रसिद्ध शिष्यों में कबीर और रैदास उनके बड़े प्रशंसक थे।

तत्कालीन समय में समाज में विशमता व्याप्त थी। धार्मिक, समाजिक, वर्ण,जाति के आधार पर समाज मे घोर निराशा का वातावरण व्याप्त था। इसी आधार पर संतपीपा ने जाति पांति, बाह्य आडम्बर और धर्म के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव की आलोचना की। उनकी दृष्टि में मानवमात्र समान है, किसी भी आधार पर उनमें भिन्नता नही करना चाहिए। उन्होने अपने शब्दों के माध्यम से समाज में अलख जगाने का प्रयास किया।

प्रतापराव की रानियों में सीतादेवी का स्थान प्रमुख माना गया है। इन्होने अपने पति के संत बनने के पश्चात् उनका अनुकरण किया व आजीवन उनके साथ रही। सीतादेवी का वास्तविक नाम पद्मावती था। ये राजपुताना के सोलंकी टोड़ाराय की राजकुमारी थी। यही एकमात्र रानी थी, जिसने अपने पति के वैराग्य में उनका साथ दिया व दिव्य स्थान प्राप्त किया। इसी कारण उनको सम्मान के साथ सीता सहचरी कहा जाता है। इनके सम्मान में अनंतदास ने लिखा है–

संपत विपत न जानही, करे कंत की सेव।
सो पतपाता नार है,रहै सबद का भेष।[2]

संत पीपाजी की चार रचनाओ की जानकारी प्राप्त होती है। इन रचनाओं में है पद, साखियाँ, ककहरा और चितावणी।

संत पीपाजी के संबंध में किंवदंती से जानकारी प्राप्त होती है कि इनको भगवान कृष्ण ने दर्शन दिए थे। भरत राजमंडल के अनुसार जब अपनी रानी सीताबाई के साथ में श्रीकृष्ण से भेट करने के लिए द्वारिका पहुंचे। जब उनकी भेंट श्री कृष्ण से नही हुई, तो वे अपनी रानी के साथ में समुद्र में कूद पड़े। फिर समुद्र के अंदर उनकी भेंट श्रीकृष्ण से हुई और ये वहाँ पर अपनी पत्नी के साथ 8 दिन भगवान श्रीकृष्ण के साथ में उनके स्वर्ण भवन में रहे। जब वे बाहर आए तो शंख, चक्र, गदा और पद्म के छापें के निशान के साथ में आए। उनकी पत्नी सीताबाई को रूकमणीजी ने अपनी अंगूठी प्रदान की। इसी के बाद में द्वारिका में छापे देने का क्रम आरंभ हुआ, जो आज तक अनवरत् चल रहा है। ये वही छापा दिया जा रहा जो संत पीपाजी अपने साथ में लाए थे। संवत् 1415 ई. से अगले 25 वर्ष तक संत पीपाजी के शासन करने की जानकारी खिलचीपुर की हस्तलिखित ख्यात् में मिलती है। पीपाराव के कोई संतान नही थी अत: उन्होने कल्याणराव को गोद लिया था।[3]

पीपाजी स्वामी रामानंदजी के शिष्य थे उनको अपने गुरू पर अटूट विश्वास था इसी विश्वास के अनुरूप उन्होने लिखा है–

पीपा गुरू परताप तें,जरगियों रगत विकार।
तन मन सब चाणन हुओ, लागी सबद कटार।।[4]

भक्तिकालीन अन्य संतो के समान संत पीपाजी ने भी गुरू को मुक्तिदाता के रूप में प्रस्तुत किया है और उनके प्रति अगाध प्रेम प्रदर्शित किया है।

संत पीपाजी संत कबीर और संत रैदास के समकालीन थे और वे उनके गुरू भाई थे। संत रैदास ने उनके बारे में लिखा है–

ना कबीर के लच्छमी,ना कोई मेरे ठाठ।
धन पीपा जिण तज्यो,सगरो राज अरू पाट।।[5]

संत पीपा मानवतावादी संत थे दुसरों के दःख से प्रभावित होकर आपने अपनी वाणी के माध्यम से कहा है–

पीपा पर उपकार में,अपने मन को मार।
पीर पराई समझ ले,अपना दुःख निसार।[6]

प्रस्तुत पद के माध्यम से संत पीपाजी का मानवमात्र के प्रति कल्याण्कारी भावना प्रतीत होती है। वे आजीवन इसी भावना का प्रचार–प्रसार करते रहे।

संत पीपा ने क्षत्रिय वर्ग द्वारा की जाने वाली हिंसा का विरोध किया है उन्होने हिंसा का स्थान छोड़कर सिलाई का कार्य प्रारंभ करवाने का श्रेय दिया जाता है अतः उनके अनुयाई पीपा दर्जी कहलाते है–
इतिहासकार अम्बादास माथुर ने उनके बारे में लिखा है–

पीपा खींची भक्त थो,छोड़ रजपूती काम।
कपड़ों सीतो हाथ सूं,मन में जपतो राम।।
तबसे चली परंपरा,पीपा दर्जी काम।
सूचिकारी काम से,हुए जगत विख्यात्।।[7]

वर्तमान में राजस्थान राज्य में आहू और कालीसिंध नदि के संगम पर गागरोनदुर्ग स्थित है इसी गागरोनदुर्ग की पर्वतमालाओं के मध्य संत पीपाजी का भव्य मंदिर स्थित है इस मंदिर में संत पीपाजी एवं उनकी पत्नी सीता सहचारी की मुर्तियाँ स्थापित है इनको देखने दूर–दूर से हजारों पर्यटक आते है।

मध्यकालीन संतो में पीपाजी एकमात्र ऐसे क्षत्रिय संत थे जिन्होने क्षत्रिय वर्ण में जन्म लिया और राज्य वैभव का त्याग कर जनमानस की भवना के अनुकूल समाज में व्याप्त कुरूतियों पर प्रहार किया और अपनी वाणी से भक्तिकाल को समृद्धि प्रदान करने का कार्य किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1 राजर्षि संत पीपाजी लेखक–ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक–राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 12
2. राजर्षि संत पीपाजी लेखक–ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक–राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 65
3. चौहान कुल कल्पद्रुम (चौहान राजपूत की शाखाओं का इतिहास एवं वंशवृक्ष) भाग–प्रथम लेखक–देसाई लल्लुभाई भीमभाई द्वितीय संस्करण 2005 प्रकाशक–राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 103
4. राजर्षि संत पीपाजी लेखक–ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक–राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 23
5. राजर्षि संत पीपाजी लेखक–ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक–राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 41
6. राजर्षि संत पीपाजी लेखक–ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक–राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 77
7. राजर्षि संत पीपाजी लेखक–ललित शर्मा प्रथम संस्करण:2012 प्रकाशक–राजस्थानी ग्रंथागार सोजती गेट,जोधपुर पृष्ठ संख्या 45

****